नसीहत व वसीयत

शैख मुहम्मद इशाक मुलतानी.

नोट: आप से दरखास्त है की इसे भाषा या ग्राम्मर का अदब ना समझे.

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम

नबी करीम ﷺ की हजरत अनस(रदी) को पांच वसीयत

हजरत अनस(रदी) फरमाते हे मुझे नबी करीम ﷺ ने पांच बातो की वसीयत की हे,

१. ऐ अनस कामिल वुज़ू करो तुम्हारी उमर बढेगी.
२. जो मेरा उम्मती मिले सलाम करो नेकीया बढेगी.
३. घर मे सलाम करके जाया करो घर की खेरियत बढेगी.
४. चाश्त की नमाज पढते रहो तुम से अगले लोग जो अल्लाह वाले बन गये थे उनका यही तरिका था.
५. ऐ अनस छोटो पर रहम करो, बडो की इज्जत करो तो कियामत के दिन मेरा साथी होगा. (तफसीर इबने कसीर)

हजरत उमर(रदी) की छे नासीहते

१. जो आदमी ज्यादा हसता हे उसका रोब कम हो जता हे.
२. जो मजाक ज्यादा करता हे लोग उसको हलका और बेहेसियत समझते हे.
३. जो बाते ज्यादा करता हे उसकी भूले ज्यादा होती हे.
४. जिसकी भूले ज्यादा होती हे उसकी हया कम हो जाती हे.
५. जिसकी हया कम हो जाती हे उसकी परहेजगारी कम हो जाती हे.
६. जिसकी परहेजगारी कम हो जाती हे उसका दिल मुर्दा हो जाता हे. (हयातुस सहाबा)

गुमराह करने वाले फितनो से पनाह मांगे

हजरत उमर(रदी) ने एक आदमी को सुना कि फितने से पनाह माग रहा था, हजरत उमर(रदी) ने फरमाया ऐ अल्लाह इसकी दुवा के अल्फाज से मे तेरी पनाह चाहता हू, फिर उस आदमी से कहा किया तुम अल्लाह से ये माग रहे हो कि वो तुम्हे बीवी बच्चे और माल ना दे, कयु के कुरान मे माल और औलाद को फितना कहा गया हे, तुम मे से जो भी फितने से पनाह मागना चाहता हे उसे चाहिये कि वो गुमराह करने वाले फितनो से पनाह मागे. (हयातुस सहाबा)

चार किसम के लोग गुस्से के एतेबार से

नबी करीम صلى الله عليه وسلم का फरमान हे,

१. कुछ लोगो को जल्दी गुस्सा आ जाता हे और जल्दी खतम हो जाता हे ये लोग ना तो तारीफ के काबिल हे और ना बुराई के काबिल हे.

२. कुछ लोगो को देर से गुस्सा आता हे और देर से खतम होता हे, ये भी ना तो तारीफ के काबिल हे और ना बुराई के काबिल हे.

३. तुम मे से बेहतरीन वो लोग हे जिनको देर से गुस्सा आता हे और जल्दी खतम हो जाता हे, रब्बे करीम हमे बेहतरीन इन्सानो मे से बनादे.

४. तुम मे से बदतरीन लोग वो हे जिनको जल्दी

गुस्सा आता हे और देर से खतम होता हे. (मिश्कात)

बरदाश्त की कुव्वत

मौलाना अहमद अली मुहद्दीस सहारनपुरी (रह) को एक शख्स ने आकर बुरा भला कहना शुरू किया, मौलाना एक बडे मरतबे के शख्स थे तालीबे ईल्मो को गुस्सा आ-गया, उसको मारने को उठे, मौलाना ने फरमाया भाई सब बाते तो झूठ नहीं कहता, कुछ तो सच भी हे तुम उसी को देखो.

पांच किस्म के लोगो की सोहबत से परहेज करो

किसी अकलमन्द ने अपने बेटे को नसीहत की के ए बेटे जिस्के पास चाहे बैठा करो मगर इन पांच किस्म के लोगो से हटकर रहना और उन्के करीब भी न फटकना.

१. झूठे के पास कभी न बैठो, क्यूकी झूठे की बात शराब के जैसी होती हे, जो करीब को दूर और दूर को करीब करती रहती हे, (शराब) धूप मे चमकती हुई रेत हे जो देखने मे पानी महसूस होती हे और जैसे ही करीब पोहचो तो दूर होती जाती हे.

२. किसी बेवकूफ के पास कभी न बैठो क्यूकी वो अपने ख्याल मे तुझे नफा पोहचाता हे और हकीकत मे वो नुक्सान होता हे.

३. किसी लालची आदमी के पास कभी न बैठो क्यूकी

वो तुझे एक लुकमा या एक घूट के बदले भी बेच देगा.
४. किसी बखील के पास कभी न बैठो क्यूकी वो तुझे उस वकत अकेला छोड देगा जब तुझे उस्की सबसे ज्यादा जरूरत होगी.
५. किसी बुजदिल की सोहबत भी कभी न इखतियार करना क्यूकी वो तुझे और तेरे मां बाप को गालिया देगा और जर्रा बराबर भी परवाह नहीं करेगा. (बुस्तानुल आरिफीन)

सात बुराइयो से बचो मुहब्बत आम हो जायेगी

हदीस मे हे इन सात जेहरीली बुराइयो से बचो,
१. बदगुमानी से बचो क्युकी सब से बडी झूठी बात हे.
२. किसी की कमजोरीयो के पीछे न रहो.
३. जासुसी ना किया करो.
४. एक दुसरे पर बे-जाह बढने की खवाहीश ना करो.
५. हसद ना करो.
६. दुश्मनी और कीना ना रखो.
७. एक दुसरे की गीबत ना किया करो.
ये ७ जेहरीली आदते हे जो उम्मत की सफो को काट देती हे, एकता के टुकडे टुकडे हो जाते हे इनसे बचना

बहुत ही ज़रूरी हे, और अच्छी आदत जिसको अपनाने से मुहब्बत आम हो जती हे वो ये हे कि अल्लाह के बन्दो भाई भाई बनकर रहो. (बुखारी, मुस्लिम)

ज़िन्दगी के लिये सुनहरी उसूल

हजरत मुहम्मद बिन शिहाब (रह) फरमाते हे हजरत उमर(रदी) ने फरमाया लायानी (जिससे न दीन का फायदा और न दुन्या का) कामों मे मत पडो, अपने दुश्मन से दूर रहो, अपने दोस्त से एहतियात बरतो, मगर जो अमान्तदार हो, क्युकी अमान्तदार के बराबर कोई चीझ भी नहीं, और गुनहगार के साथी ना बनो, कि वो तूम्हे भी गुनाह सिखाएगा, और उसको अपना राज ना बतावो, और अपने मामलात मे उन लोगो से मशविरा लो जो अल्लाह से डरते हे.

एक कीमती नसीहत

एक बुजरूग फरमाया करते थे, तुम गम आने के पहले ही दिन वो काम किया करो जो दुसरे लोग गम आने के तीसरे दिन किया करते हे, मान लो कि घर मे किसी का इन्तेकाल हो गया, तो तीसरे दिन लोग किया करते हे? दुवा करके अपने कामो मे चले जाते हे, कि शोक तो तीन दिन तक हे, तो जब तीसरे दिन सबर करना हे तो वो ही काम इन्सान पहले दिन ही क्यू ना करले, ताकी सबर का सवाब मिल जाये,

याद रखिये बे-सबरी से मुसीबते नही टला करती, हा इन मुसीबतो पर मिलने वाले सवाब से इन्सान मेहरूम हो जाता हे.

एक बहुत ही खास अमल

हुज़ूर صلی اللہ علیہ وسلم ने इरशाद फरमाया एक सहाबी ने अर्ज़ किया या रसुलल्लाह! नेकियो की तो बहुत किस्मे हे और मे इन सबको अन्जाम देने की ताकत नही रखता, इसलिये मुझे कोइ ऐसी चीझ बता दीजिये जिसे मे गाठ बांध लू और ज्यादा बाते ना बतायेगा क्युकी मे भूल जाउगा, हुज़ूर صلی اللہ علیہ وسلم ने उस्के जवाब मे इरशाद फरमाया तुम्हारी ज़बान अल्लाह के ज़ीक्र से तर रहा करे.

जब तक वुज़ू के साथ रहोगे फरिश्ते नेकीया लिखते रहेगे

हजरत अबु हूरेरा(रदी) से रिवायत हे नबी करीम صلی اللہ علیہ وسلم ने उनसे फरमाया ऐ अबु हूरेरा जब तुम वुज़ू करो तो "बिस्मिल्लाहि वल हमदुलील्लाह" पढ लिया करो, इसका असर ये होगा कि जब तक तुम्हारा ये वुज़ू बाकी रहेगा उस वकत तक तुम्हारे मुहाफिज फरिश्ते तुम्हारे लिये बराबर नेकीया लिखते रहेगे. (मआरिफुल हदीस)

बद-अखलाक के कान मे अजान देना

हजरत अली(रदी) से रिवायत हे कि नबी करीम صلى الله عليه وسلم ने फरमाया कि जो बद-अखलाक हो या जिसकी आदत खराब जाये चाहे वो इन्सान हो या जानवर उस्के कान मे अजान दो. (मिश्कात)

इज्तिमाइयत की शान

हाजी इम्दादुल्लाह(रह) एक मरतबा ये मजमून बयान फरमा रहे थे की जिस तरह राहत व आराम नेमत हे इसी तरह आजमाइश, बला भी नेमत हे, उसी वकत एक शख्स आया जिसका हाथ जख्म की वजह से खराब हो रहा था, और सख्त तकलीफ मे मुब्तला था, अर्ज़ किया मेरे लिये दुआ कर दिजये,

हजरत थानवी(रह) ने फरमाया की उस वकत मेरे दिल मे ये ख्याल गुजरा की हजरत अगर इसके लिये दुआ ना करे तो इस शख्स के मिजाज की रिआयत नहीं होती हे और ये शेख कामिल के लिये ज़रूरी हे, आप ने फरमाया सब लोग दुआ करे, ए अल्लाह अगरचे हम को मालूम हे की ये तकलीफ भी नेमत हे, लेकिन हम अपनी कमजोरी की वजह से इस्को बरदाश्त नहीं कर सकते, इसलिये इस बीमारी वाली नेमत को सेहत वाली नेमत से बदल दिज्ये. (इम्दादुल मुश्ताक)

हवाला: एक हज़ार अनमोल मोती उर्दु से मज़मून का खुलासा लिप्यान्तरण किया गया हे.